उ०प्र० जैन विद्या शोध संस्थान के अन्तर्गत पुरस्कार/सम्मान प्रदान करने की नियमावाली-2025

पृष्ठ भूमि-

उ०प्र० जैन विद्या शोध संस्थान, संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश के अन्तर्गत स्थापित एक स्वायत्तशासी संस्थान है। संस्थान का प्रमुख उद्देश्य भारत के विभिन्न भागों में प्रचलित विभिन्न जैन परम्पराओं, संस्कृति एवं विद्याओं का राष्ट्रीय संदर्भ में अध्ययन एवं तत्संबंधी शोध को प्रोत्साहन एवं आधारभूत मान्यताओं, मानवीय मूल्यों एवं कला कौशल को संरक्षण प्रदान करना है। उक्त लक्ष्य की प्राप्ति हेतु संस्थान द्वारा परिचर्चा, संगोष्ठी, व्याख्यान, सम्मेलन, सेमिनार,वाद-विवाद प्रतियोगिताओं, निबंध प्रतियोगिताओं,पेन्टिंग प्रतियोगिताओं आदि का आयोजन किया जाता है।

पुरस्कार/सम्मान का उद्देश्य-

ऐसे महानुभावों/विद्वानों को सम्मानित करना, जिन्होंने जैन विद्या, संस्कृति, परम्परा, साहित्य, दर्शन, अध्यात्म आदि क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्यों एवं जैन धर्म के प्रचार-प्रसार के माध्यम से समाज के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया हो। ऐसे महानुभावों/विद्वानों को सम्मान प्रदान करने के लिए निजी क्षेत्र, संगठन, ट्रस्ट एवं समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के माध्यम से पुरस्कारों को प्रायोजित कराया जायेगा।

पुरस्कारों/सम्मान का नामकरण-

पुरस्कारों/सम्मान का नामकरण उक्त पुरस्कार/सम्मान के प्रायोजक निजी क्षेत्र, संगठन, ट्रस्ट एवं समाज के प्रतिष्ठिति व्यक्तियों के सुझावों पर किया जायेगा। वर्ष 2025 के लिए निम्नवत् सम्मान संस्थित किये गये हैं:-

क्र0	पुरस्कार/सम्मान	धनराशि	क्षेत्र / विधा
1	स्व0 श्री किशोर चन्द्र जैन की पुण्य स्मृति में ''तीर्थंकर ऋषभदेव सम्मान''।	रू0 1,00,000/-	जैन श्रुत संवर्धन हेतु प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी आदि भाषाओं में पुस्तक लेखन, मौलिक शोध अथवा जैन धर्म, दर्शन व संस्कृति के प्रचार-प्रसार में न्यूनतम 20 वर्षों का उल्लेखनीय योगदान।
2	स्व0 श्री निर्मल कुमार सेठी की स्मृति में "तीर्थंकर महावीर अहिंसा पुरस्कार/ सम्मान"।	रु0 51,000/-	जैन धर्म एवं संस्कृति के अनुरूप ''शाकाहार, सदाचार एवं संस्कार'' पर मौलिक शोध एवं लेखन/पुस्तक रचना तथा राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शाकाहार के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय योगदान।
3	स्व0 श्री हरक चन्द्र जैन सेठी की स्मृति में "आचार्य कुन्द कुन्द पुरस्कार/ सम्मान"।	रु0 51,000/-	जैन धर्म एवं संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु प्राकृत/संस्कृत/हिन्दी भाषा में पुस्तक लेखन अथवा जैन धर्मशास्त्रों पर राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित प्रवचन/ संगोष्ठियों/सेमिनार में प्रतिभाग करते हुए उत्कृष्ट योगदान।
4	स्व0 श्री राज बहादुर जैन एवं श्री धर्मवीर जैन जी की स्मृति में "भरत चक्रवर्ती सम्मान"	रु0 31,000/-	जिनवाणी का प्रसार-प्रसार/जिज्ञासा समाधान हेतु लेखन/धर्मशास्त्रों के संरक्षण में उल्लेखनीय योगदान।

5	स्व0 श्री नवीन जैन की स्मृति में "श्री गणेश प्रसाद वर्णी श्रुत आराधक सम्मान"	रू0 21,000/-	जिनवाणी का प्रचार-प्रसार/जिज्ञासा समाधान हेतु लेखन अथवा धर्मशास्त्रों के संरक्षण में उल्लेखनीय योगदान।
6	स्व0 राजकुमार-संतोष कुमार जैन की स्मृति में "श्रुत संवर्धन पुरस्कार"।	रू0 21,000/-	30-40 वर्ष आयु के युवा जिन्होंने संस्कार शालाओं में जैन धर्म/दर्शन/संस्कृति पर पाठ्य क्रम आयोजित किये हों अथवा इस क्षेत्र में रचित मौलिक पुस्तक।

नोट- निजी क्षेत्र, संगठन, ट्रस्ट एवं समाज के प्रतिष्ठिति व्यक्तियों के सुझाव एवं प्रस्ताव पर सम्मान/पुरस्कार की संख्या सक्षम स्तर से अनुमोदन प्राप्त कर परिवर्तित की जा सकेगी ।

<u>आवेदन की प्रक्रिया-</u>

1- पुरस्कार/सम्मान हेतु विज्ञापन समाचार पत्रों, संस्थान एवं संस्कृति विभाग के विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्म, वेबसाईट आदि के माध्यम से प्रसारित/प्रकाशित किया जायेगा।

2- पुरस्कार/सम्मान की पात्रता हेतु श्रुत संवर्धन पुरस्कार के अतिरिक्त अन्य पुरस्कार/सम्मान हेतु आवेदक की न्यूनतम आयु 40 वर्ष होगी।

3- आवेदक द्वारा सभी प्रकार से पूर्ण आवेदन निर्धारित प्रारूप पर ई-मेल अथवा डाक के माध्यम से संस्थान को प्रेषित किया जायेगा। विभिन्न सामाजिक संगठनों के द्वारा भी संबंधित क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाले महानुभाव को नामित किया जा सकेगा।

4- यदि किसी भी स्तर पर यह पाया जाता है कि आवेदक द्वारा प्रस्तुत सूचना आंशिक अथवा पूर्णरूप से असत्य अथवा भ्रामक पायी जाती है तो आवेदन निरस्त कर दिया जायेगा।

5- निर्धारित अवधि में प्राप्त समस्त आवेदनों/नामांकनों का परीक्षण करते हुए पुरस्कार/सम्मान हेतु योग्य महानुभावों का चयन संस्थान द्वारा गठित चयन समिति के द्वारा किया जायेगा।

6- पुरस्कार/सम्मान के संबंध में संस्थान का निर्णय अन्तिम होगा। संस्थान के द्वारा बिना किसी कारण बताये पूरी प्रक्रिया को स्थगित अथवा निरस्त किया जा सकेगा।

7. आवेदन/नामांकन प्राप्त करने हेतु अन्तिम तिथि 20 दिसम्बर, 2025 होगी। जिसे अपरिहार्य परिस्थतियों में सक्षम स्तर से अनुमोदन प्राप्त करते हुए बढ़ाया जा सकेगा। पुरस्कार/सम्मान संस्थान के स्थापना दिवस पर अथवा संस्थान द्वारा निर्धारित किसी अन्य अवसर पर प्रदान किया जायेगा ।